

प्र०- अंतर्नादिक महासागर में बहने वाली धाराओं का उल्लेख करें।

उ०- महासागरीय धाराएँ महासागरीय जल में नदी की भाँति एक निश्चित दिशा में प्रवाहित होने वाली जलीय धारि के रूप में होती हैं, जिनके कारण महासागरों की विशाल जलराशि का स्थानान्तरण होता रहता है। ये महासागरीय जल की सर्वाधिक महत्वपूर्ण धारि हैं।

धाराओं को दो भागों में वर्गीकृत किया जाता है।

(i) उष्ण या गर्म जल धारा (Warm current)

(ii) शीतल या ठंडी जल धारा (Cold current)

- (i) गर्म जल धारा - निम्न अक्षांशों में उष्ण कटिबंधों से उच्च अक्षांशीय समशीतोष्ण और उपशुष्क कटिबंधों की ओर बहने वाली धाराओं को गर्म जल धारा कहते हैं।

- (ii) ठंडी जल धारा - उच्च अक्षांशों से निम्न अक्षांशों की ओर बहने वाली धाराओं को ठंडी जल धाराएँ कहते हैं।

- धाराओं की उत्पत्ति के कारण -

महासागरों में धाराओं की उत्पत्ति मुख्यतः महासागरीय एवं स्थलीय कारणों से प्रभावित होती है। इनमें से कुछ कारक तो धाराओं की उत्पत्ति के लिए उत्तरदायी होते हैं, जबकि कुछ कारक उनकी गति, दिशा आदि को निर्धारित करते हैं। इस प्रकार इन दोनों प्रकार के कारकों के सम्मिलित प्रभाव से ही किसी धारा का वास्तविक स्वरूप निर्धारित होता है। इनमें प्रमुख कारक निम्नलिखित हैं।

- (1) पृथ्वी का प० से पू० दिशा की ओर घूर्णन
- (2) तापमान संबंधी विभिन्नता
- (3) लवणता में भिन्नता
- (4) जल घनत्व में भिन्नता
- (5) वायु शक्ति में भिन्नता
- (6) पानी के प्रवाह की दिशा
- (7) वाष्पकरण की मात्रा तथा प्रदूषण में भिन्नता
- (8) वर्षा की मात्रा

(9) तट

(10) महासागरीय तली की स्थलाकृति

(11) मौसमी परिवर्तन

(12) शुष्कवाक्य

(13) विद्युत्पण वन से सम्बन्धित कारक

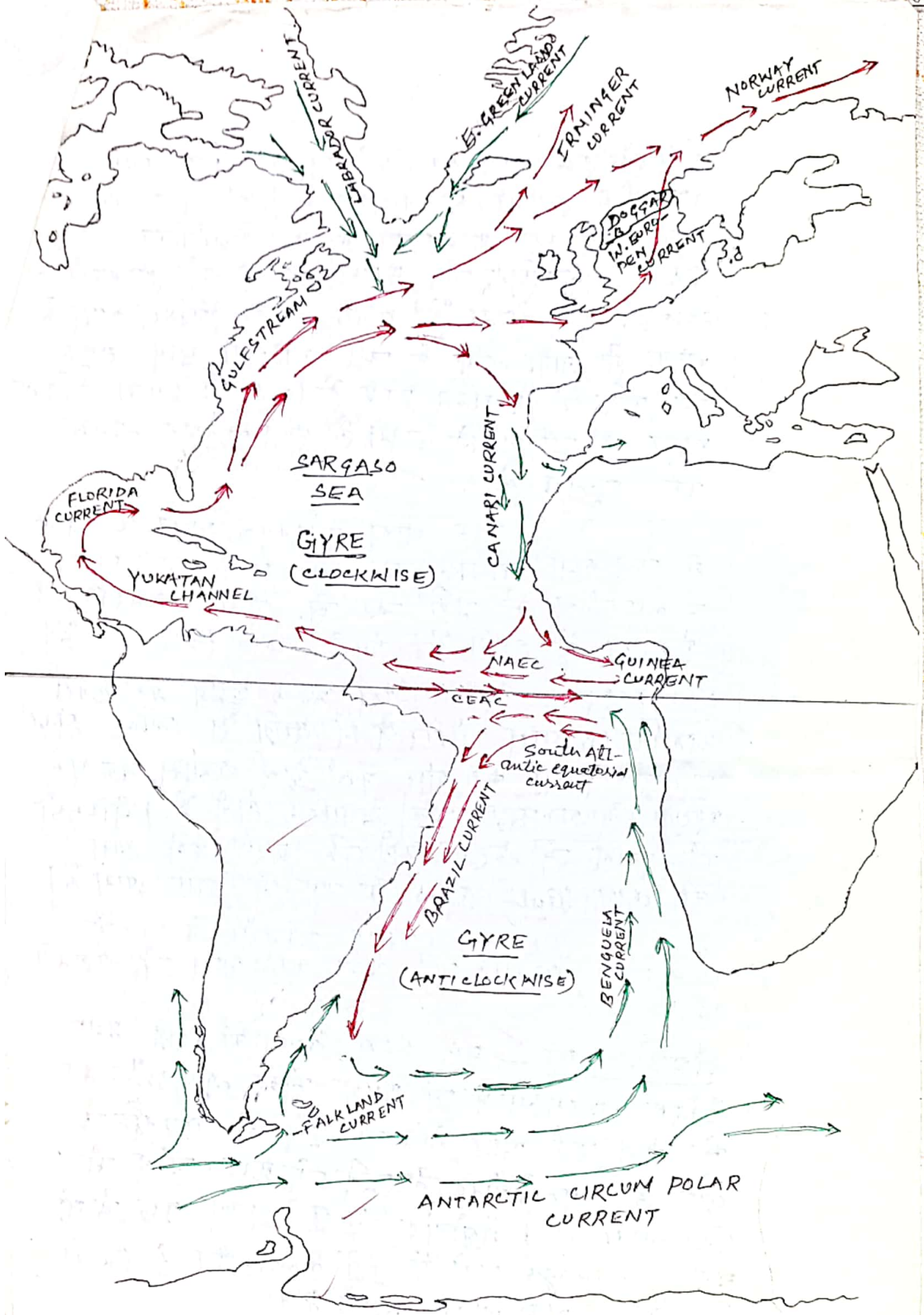
— महासागरीय जल की विशेषता :-

जो आरारु दक्षिण से उत्तर चलती हैं उसे उत्तरी आरारु कहते हैं, अधोलो स्वाश्री की दिशा का नामकरण स्वाश्री की दिशा के विपरित होना है। पूर्वी पवन से पश्चिमी आरारु का जन्म होता है। आरारु की गहराई 1 मील से अधिक नहीं होती और इसकी चौड़ाई 150 मील होती है।

आरारु की जल की प्रवाह विधि से साफा जाता है। जिसमें 'कठि' के टुकड़े का प्रयोग किया जाता है। इसके लिए "एकमैत्र करंट मिटर" का प्रयोग किया जाता है। इसका प्रयोग सर्वप्रथम 'एकमैत्र' महोदय ने किया। उन्होंने 'एकमैत्र स्पाथरस' का भी प्रयोग किया जिसमें लवणों का दिशा में नली चलती अपितु यह उत्तरी गोलार्ध में स्वाश्री की दिशा में नहीं चलती। अपितु यह उत्तरी गोलार्ध में स्वाश्री की दिशा के दाहिने मुड़ जाती है। जिसका कारण धार्मिकतात्मक वन है। (इस प्रकार धार्मिकतात्मक वन की एकमैत्र स्पाथरस कहा जाता है।)

— अर्धवृत्तिक महासागर की आरारु :-

(1) — उत्तरी विषुवत रेखा आरारु → उत्तरी विषुवत रेखा आरारु 0° से 10° ऊ० अक्षांशों के मध्य विकसित होती है। अफ्रिका के प० तट जहाँ पर उत्तरी की ढंडी जल आरारु बसे ढकेलती है तो यह आरारु मूमध्य रेखा के सामान्तर ^{प० अक्षांश} चलती है और 20° अमेरिका के पूर्वी भाग से ^{और आरारु} ~~चलती है~~



अटलांटिक महासागर की धाराएँ

हैं। ~~यह~~ इस धारा का चलने का स्वरूप बड़ा कारण
 जमापारिक हवाओं का प्रभाव है। यह एक गर्म जल
 धारा है जिसका जल स्वच्छ है। इस अमेरिका के पूर्वी
 तट के अवरोध के कारण समुद्र की शाखाओं में
 विभाजन हो जाता है। पहली शाखा एंटिलियज धारा है
 नाग से जानी जाती है तथा पश्चिमी द्वीप समूह
 के पूर्व में प्रवाहित होती है। दूसरी शाखा कैरेबियन
 सागर में प्रविष्ट हो जाती है तथा यूक्रेन-नैनस
 तक पहुँचती है।

यह धारा कैरेबियन सागर के अंदर
 से ईसाईया फ्लोरिडा तट से होती हुई यह
 ड० अमेरिका में पहुँचकर तट के समतल उत्तर की
 ओर बहने लगती है। जिसे गल्फ स्ट्रीम कहते हैं।

- गल्फ स्ट्रीम — यह धारा उत्तर में 30° उत्तरी
 अक्षांश के पास मेक्सिको की खाड़ी से उत्पन्न होकर
 ए० पू० दिशा की ओर 40° उ० अक्षांश तक प०
 ध्रुव के प० तट तक प्रवाहित होती है। मेक्सिको
 की खाड़ी में उत्पन्न होने के कारण इसे खाड़ी
 की धारा (Gulf Stream) के नाम से जाना जाता है।

यह धारा ग्रीनलैंड के प० से
 धारण वाली नॉर्डोडोर की ठंडी धारा से मिलती
 है।

- नॉर्डोडोर धारा — यह धारा नॉर्डोडोर की खाड़ी तथा
 डेविस जलमाला से प्रारंभ होकर न्यूफाउंडलैंड तट
 से होती हुई ग्रांड बैंक के पूर्व में अणुसमी के
 काठ 50° प० देशांतर के पूर्व में गल्फ स्ट्रीम से
 मिल जाती है। नॉर्डोडोर धारा के साथ बर्फ के बड़े
बड़े Icebergs आते हैं जो गल्फ स्ट्रीम से मिलती
हैं और cold wall बनाती हैं।

नॉर्डोडोर और गल्फ स्ट्रीम की
 धाराएँ मिलती हैं तो वहाँ धना कहरावा बनाते हैं
 जो सागरीय धाराओं में खाया पहुँचाना है।

पृष्ठ सं. 100

इन दो आरामों के मिलने से शैवाल तथा प्लैंक्टन (Phyto plankton और Zoo plankton) पाए जाते हैं। इसलिए यहाँ मछली पाली है। मछली की अधिक मात्रा में पाए जाने से इसे बैंक कहते हैं, जो "ग्रैंड बैंक" के नाम से प्रसिद्ध है।

इन दो आरामों के मिलने के बाद यह धारा ऊँची होगी हुई तब भागों में बट जाती है। पहली धारा आइसलैंड के पूरब से होती हुई उत्तर चली जाती है। इसे IRMINGER CURRENT कहते हैं। यह धारा उत्तरी धारा होती है। दूसरी धारा पूरब की ओर बहती है। ब्रिटेन (U.K.) के ड० में English Channel से होती हुई उत्तरी समुद्र में पहुँचती है। यहाँ पर इन धाराओं के आने से मछलीया मछी पाली जाती है। यहाँ भी एक बैंक है जिसका नाम डॉगर बैंक है। यहाँ इस धारा की पश्चिमी घुंटापिथ धारा कहते हैं। यह धारा नार्वे के डगर से होती हुआ उत्तरी अटलांटिक महासागर में बहती जाती है और उत्तर से आती है। इस गर्म जल धारा के कारण ही नार्वे का बरफ पर जात्रे में भी कछि नहीं जम पाता। इस धारा का मारमान्स कन्स्ट्रगॉफ कसी धारा के कारण एरे 12 महीने खुला रहता है।

तीसरी धारा पूरब के तट से होती हुए ड० की ओर बहती है, और अफ्रीका के पश्चिमी तट पर आती है। यह इसे केनरी धारा कहते हैं। यह धारा अपेक्षा कम होती होती है। इसकी गति 20 km से 40 km होती है। प्रतिदिन होती है। यह धारा विषुवत रेखिध धारा से निम्न आती है।

4- काउन्टर गल्फ स्त्रीम ^(अभि) → गल्फ स्त्रीम, आर मैसोडोर का
 ठंडी जल धारा जहाँ मिलती है उस मिलन बिन्दु
 पर एक भूत बन जाता है, जिससे जल में
 सम्भवतः गति हो जाती है। वह जल अंदर ही
 अंदर गल्फ स्त्रीम के विपरीत दिशा में चलने लगी
 है और यह जल फ्लोरिडा के तट के पास
 निकलती है। इस प्रकार बहा एक शीतल बन
 जाता है जिसे काउन्टर गल्फ स्त्रीम कहते हैं।

(2)- प्रतिविक्षुन्न रेखीय धारा (counter equatorial
 Atlantic current) — यह धारा भूमध्य-रेखी-
 य भाग में प० दिशा में चलती है। इसकी
हिमाली उ० तथा द० विषुव रेखीय धाराओं के
मध्य में इसे हिमाली धारा के नाम से भी जाना
जाता है। पश्चिम भाग में यह झुप हो जाती है।
 परन्तु पूर्वी भाग में इसका अस्तित्व बना
 रहता है। यह धारा गर्म जल धारा है।

(3)- द० विषुव रेखीय धारा —

यह धारा भी प० अफ्रीका तथा पूर्वी
 अमेरिका के तटों के मध्य ० से १०° द०
 अक्षांशों के मध्य प्रवाहित होता है। यह धारा
 उ० विषुव रेखीय धारा से अठ्ठाई स्या
 घबल होती है। यह धारा कास्तन में बंगाला
धारा की ही एक शाखा है। ब्राजिल तट के
पास यह धारा दो भागों में बंट जाती है।
पश्चिम शाखा उ० प० साखा के रूप में उत्तरी
विषुव रेखीय धारा से द्वितीया के पास
मिल जाती है। इसी धारा द० की ओर
हट जाती है तथा ब्राजील धारा को जन्म
देती है। यह धारा भी वायव्य पवन से
पूरि लंकड पूर से पश्चिम दिशा में अग्रसर
होगी है।

- प्राचीन धारा - यह धारा उच्च तापमान तथा उच्च लवणता वाली ग्रीष्म ऋतु धारा है। इसकी उत्पत्ती १०° विषुवत् रेखीय धारा के समुद्रों के पास प्राचीन तट से होकर ~~की शाखाओं~~ डीशावन के कारण होती है। एक शाखा उत्तर में विषुवत्-रेखीय धारा में मिल जाती है तथा दूसरी शाखा प्राचीन धारा के नाम से १०° अमेरिकी तट के समानान्तर 40° ६०° अक्षांश तक प्रवाहित होती है। यह धारा पड़ोसी हवाओं से प्रवाहित होकर पूरब दिशा में बहती जाती है। यहाँ पर १०° से शीत वाती फ्रंटों की धारा प्राचीन धारा से मिलती है।

- फॉकलैंड धारा - अंटार्कटिक महासागर का ठंडा जल फॉकलैंड धारा के रूप में १०° अमेरिकी के पूर्वी तट पर अर्जेन्टाइना तक प्रवाहित होता है। इसका अधिकतम विस्तार 30° ६०° अक्षांश तक पाया जाता है। यह धारा से लिन-एंड १०° अमेरिकी के तट पर मिल जाती है।

- १०° अटलांटिक धारा - लवण भाग के अभाव में पड़ोसी पवन द्वारा प्रेरित होकर तीव्र गति से प्रवाहित होती है। इसे १०° अटलांटिक धारा कहा जाता है। यह ठंडा जल धारा है।

- बेंगुला धारा - यह ठंडी धारा है जो १०° अफ्रीका के पश्चिमी तट के लक्ष्य उत्तर दिशा में प्रवाहित होती है। यह धारा नामिबिया मालस्थल के किनारे होकर बहती है। इसलिए नामिबिया मालस्थल को शीत जल का मालस्थल कहा जाता है। यह धारा आर्जेन्टाइन के १०° विषुवतीय धारा से मिलती जाती है।